938. तद्धितेष्वचामादेः - 7/2/117

यह विधिसूत्र है। 'अङ्गस्य' 6.4.1 सूत्र का अधिकार यहाँ आता है। सूत्र का अर्थ है -

यदि तद्धित प्रत्यय के बाद 'ञित्' और णित् प्रत्यय आते हैं तो 'अङ्ग' के 'अच् (अइउण्, ऋऌक्, एओङ्, ऐऔच्) में अर्थात् स्वर में आदि 'अच्' की वृद्धि होती है। यथा - पौर्वशालः

वार्तिक - द्वन्द्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे नित्यसमासवचनम्' - द्वन्द्व और तत्पुरुष समास में यदि उत्तरपद हो तो वह नित्य समास होता है।

पौर्वशालः - लौ० वि० - पूर्वस्यां शालायां भवः, अ० वि० पूर्वा+ङि० शाला + ङि।

'तद्धितार्थोत्तरपद समाहारे च' सूत्रानुसार तद्धितार्थ में दिशावाची 'पूर्वा' का 'शाला' शब्द के साथ समास हुआ। 'कृत्त०' से प्राति० संज्ञा, 'सुपो..' से विभक्ति का लोप, 'प्रथमा...' से उपसर्जन संज्ञा, 'उपसर्जनं पूर्वम्' से पूर्वनिपात - पूर्वा शाला। 'दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञ' से 'ञ' प्रत्यय, 'यस्येति च' 'शाला' के अन्तिम 'आ' का लोप, 'तद्धितेष्वचामादेः' से आदि अच् की वृद्धि, पूर्व के 'ऊ' का 'औ' होने पर 'सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भावः' से 'पौर्वा' का पुंवद्भाव होकर 'पौर्वशाल' बना, पुनः इसकी प्रातिपदिक संज्ञा, स्वादि कार्य होकर 'पौर्वशालः' सिद्ध हुआ।

(b) पञ्चगवधनः - लौ० वि० - पञ्च गावो धनं यस्य, अ० वि०- पञ्चन् जस् + गो + जस् + धन + सु।

तद्धितार्थो... से उपसर्जनं...' पूर्वनिपात, पुनः प्राति० संज्ञा। 'न लोपो प्रातिपदिकान्तस्य' सूत्र से पञ्चन् + गो + धन - पञ्च + गो + धन - 'गोरतद्धितलुकि' 'न' का लोप होकर टच् प्रत्यय (अ), 'एचोऽयवायावः' सूत्र से गो शब्द 'ओ' का अवादेश - गव् + अ = पञ्चगवधन +सु

पञ्चगवधनः।

940. तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः - 1/2/42

यह संज्ञा सूत्र है। जो समास के पद समान अधिकरण वाले होते हैं और वह तत्पुरुष का हो तो कर्मधारय समास कहलाता है। यथा - नीलोत्पलम्।

941. संख्यापूर्वो द्विगुः - 2।1।52
यह संज्ञा सूत्र है। इसका अर्थ है - संख्यावाची पूर्वपद के उत्तरवर्ती तद्धित अर्थों वाले पद समाहार वाच्य होने पर द्विगु संज्ञक होता है।

942. द्विगुरेकवचनम् - 2।4।1
यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ समाहार अर्थ में प्रयुक्त होने पर भी द्विगु समास एकवचन में होता है।

943. स नपुंसकम् - 2।4।17
यह विधिसूत्र है। समाहार अर्थ में द्विगु और द्वन्द्व समास नपुंसक लिंग में होते हैं। यथा - पञ्चगवम् - लौ० वि० पञ्चानां गवानां समाहारः। अ० वि० - पञ्चन् + आम् + गो + आम्।
'तद्धिता...' से 'गोरतद्धितलुकि' तक - पञ्च + गव, 'संख्यापूर्वो द्विगुः' से द्विगु संज्ञा, 'द्विगुरेकवचनम्' सूत्रानुसार समाहार अर्थ में प्रयुक्त होने पर एकवचन की विवक्षा, 'स्वौ..' से सु स्वादि कार्य, 'स नपुंसकम्' से नपुंसक लिंग में होकर सु का 'अतोऽम्' से 'अम्' आदेश होकर 'पञ्चगवम्' रूप सिद्ध हुआ।

944. विशेषणं विशेष्येण बहुलम् । 2।1।57
यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ 'विशेषण' का 'विशेष्य' के साथ बहुलता (विकल्प) से तत्पुरुष समास होता है।
यथा - नीलम् उत्पलम् (लौ० वि०), नील + सु + उत्पल + सु
अलौ० वि० - नीलोत्पलम् - 'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' सूत्रानुसार 'नीलम्' विशेषण पद का 'उत्पल' विशेष्य पद के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित०' से स्वौ.... से 'सु' और 'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर 'नीलोत्पलम्' रूप सिद्ध हुआ

(b) कृष्णसर्पः - लौ० वि० - कृष्णश्चासौ सर्पश्च, अ० वि० - कृष्ण + सु, सर्प + सु। Same as 'नीलोत्पलम्' सु को विसर्ग

Uma Pathak
Deptt. of SKt.
B.A. Ist Yr. 29.4.2020

Scanned with CamScanner